शिक्षकों के साथ पढ़ने-लिखने का सफ़र

कमलेश चंद्र जोशी

कोविड महामारी के दौरान बने तालाबन्दी के हालात में न सिर्फ़ बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने के लिए ऑनलाइन वैकल्पिक कोशिशें की गईं वरन् शिक्षकों के दक्षता संवर्धन के प्रयासों को भी निरन्तर रखने के प्रयास किए गए। ऐसे ही प्रयासों के अन्तर्गत यह लेख पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी दिखाने वाले शिक्षकों के एक छोटे समूह के साथ वॉट्सएप के माध्यम से जुड़कर किए गए कार्यों के अनुभव प्रस्तुत करता है। इन अनुभवों में शिक्षक समूह को पढ़ने के लिए दी गई सामग्री, उससे जुड़ाव बनाने व संवाद करने की प्रक्रिया आदि के विवरण शामिल हैं। सं. .

पृष्ठभूमि

प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों के साथ मिलना-जुलना होता रहा है। शिक्षकों से जब भी मुलाक़ात होती है तो उनसे अनौपचारिक रूप से यह बात भी ज़रूर होती है, मसलन, क्या आपको पढ़ने का समय मिल पाता है, आप क्या-क्या पढ़ते हैं? अधिकतर शिक्षकों का जवाब अकसर यह रहता है कि पढ़ने का समय नहीं मिल पाता। कुछ शिक्षक अख़बार, पत्रिकाएँ आदि पढ़ने की बात करते हैं परन्तु मुकम्मल रूप से किताबों के पढ़ने के अनुभव बहुत कम उभरकर आ पाते हैं।

शिक्षकों के पढ़ने के रुझान को देखकर यह प्रश्न भी मन में उभरता है कि जिस दौर में ये शिक्षक बने हैं उस दौरान उन्हें अपने आसपास, विद्यालय-कॉलेज में पुस्तकें पढ़ने का किस प्रकार का और कितना सान्निध्य मिला है?

हम लोग शिक्षक पेशेवर विकास पर कार्य कर रहे हैं और इसके लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण / बैठकों आदि के माध्यम से शिक्षकों के साथ संवाद करते हैं। यहाँ भी मन में हमेशा यह बात उभरती रही है कि शिक्षक को तो नियमित रूप से पढ़ने-लिखने वाला होना ही चाहिए। बिना इसके उनकी कार्यशालाओं की समझ कैसे पुख़्ता होगी, शिक्षण का नज़रिया कैसे विकसित होगा, विषय की समझ कैसे बनेगी और विस्तार लेगी, वे अपने विषय को अच्छे-से कैसे पढ़ा पाएँगे, और बच्चों में पढ़ने का उत्साह कैसे बना पाएँगे?

पढ़ने पर शिक्षकों से बातचीत की शुरुआत

मार्च 2020 में कोविड महामारी के कारण विद्यालय बन्द हो गए थे। तालाबन्दी का एक लम्बा दौर शुरू हुआ। सभी अपने-अपने घर पर ही थे। शुरुआती एक-दो सप्ताह के बाद शिक्षकों से बात शुरू हुई। बातचीत से यह लगा कि क्यों न पढ़ने-लिखने में रुचि दिखाने वाले एक छोटे समूह के साथ वॉट्सएप समूह के माध्यम से संवाद शुरू किया जाए। इस समूह में विभिन्न विषयों से जुड़ी रोचक सामग्री प्रेषित की जाए जिसमें किसी भी विषय से जुड़े शिक्षक व शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अन्य कार्यकर्ता भी अपना जुड़ाव बना सकें। सामग्री रोचक हो, बहुत लम्बी न हो और वह पन्द्रह-बीस मिनट में पढ़ भी ली जाए।



मुख्यतः ये एक पठन समूह बनाने और शिक्षा पर संवाद को सम्भव करने का प्रयास था।

साझा की गई सामग्री पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया, उनके इंटरप्रिटेशन व बातचीत से यह समझ आया कि सामग्री को पढ़ लेने मात्र से ही काम नहीं चलेगा। उसको कैसे पढ़ें और एक शिक्षक के होने से कैसे जोड़ पाएँ, यह नज़रिया भी विकसित करना होगा। यह भी लग रहा था कि इसपर निरन्तर संवाद करने की ज़रूरत है। धीरे-धीरे यह भी समझ आने लगा कि अभी जो प्रयास कर रहे हैं वह पढ़ने का रुझान बनाने का एक ज़रिया मात्र हैं। व्यापक उद्देश्य तो शिक्षक का पेशेवर विकास ही है। इस तरह की सामग्री पढ़ना, उसपर प्रतिक्रिया लिखना व परिचर्चा करना शिक्षक समूह के क्षमतावर्धन का रास्ता भी है।

इस समूह की शुरुआत में कुल 14 सदस्य थे। आज लगभग 40 सदस्य इस समूह में हैं जिनमें अधिकांश महिला शिक्षिकाएँ हैं। ऐसा नहीं रहा है कि समूह के सभी सदस्य आलेखों पर अपनी प्रतिक्रिया देते रहे हों या साप्ताहिक परिचर्चा में शामिल हो रहे हों। सदस्यों की भागीदारी में विभिन्न कारणों से उतार-चढ़ाव रहता है। औसतन 28 सदस्य इसमें जुड़ते रहते हैं, और 15 से 18 साप्ताहिक परिचर्चा में आ जाते हैं। दो वर्षों में समूह की क़रीब सौ से ऊपर ऑनलाइन चर्चाएँ हो चुकी हैं, और सदस्यों को पढ़ने के लिए तीन सौ से अधिक आलेख प्रेषित किए जा चुके हैं। अब स्कूल नियमित होने के उपरान्त समूह में कक्षा के कामकाज के बारे में भी चर्चा की जाती है। इसपर कभी आगे लिखा जाएगा।

सामग्री कैसी-कैसी

इस पठन समूह को संचालित करने में प्रेषित सामग्री की केन्द्रीय भूमिका रही है। सामग्री चयन में ध्यान रखा गया कि वह पढ़ने में रोचक हो, नई दृष्टि देती हो, उसमें संवैधानिक मूल्य उभरते हों, भाषा सहज हो, प्रस्तुतिकरण अच्छा हो और स्कूल, कक्षा एवं शिक्षा से जुड़े कार्यकर्ता / व्यक्ति उससे अपना जुड़ाव बना सकें। उन्हें महसूस हो कि विभिन्न विषयों पर रोचक तरीक़े से भी लिखा जा सकता है। समूह में समय-समय पर कहानियाँ व कविताएँ भी साझा की गईं। इनके चयन का आधार यह रहा कि वे पाठ्यपुस्तकों में पढ़ी कहानियों से इतर हों। उनमें भी विषय, भाषा, प्रस्तुतिकरण को लेकर नयापन हो। चयनित सामग्री के कुछ उदाहरण हैं : अरुण कमल की रचनाएँ– '*हवा*', '*आलू*', '*सर्दियों की रात में गाय*', '*जल*'; विनोद कुमार शुक्ल की कहानी '*गोदाम*'; उदयन वाजपेयी की कहानियाँ– 'शेर और कवय्या' एवं '*घुड़सवार*'; प्रियम्वद की कहानी '*मुन्ना बुनाईवाले*', आदि।



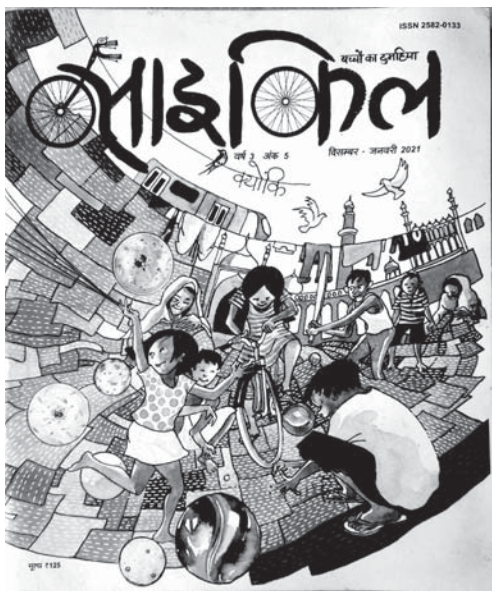


शिक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर भी सामग्री शामिल की गई थी, जैसे– सी एन सुब्रह्मण्यम का लेख 'फ़ेल न किया तो क्या किया?'; मोहम्मद उमर के लेख 'वे स्कूल क्यों आते हैं' और 'भोजन की थाली से'; कैरेन हेडाक के लेख 'बच्चों से कैसे प्रश्न पूछें' और 'बच्चों के चित्र क्या बताते हैं' आदि। इनके अलावा, सुशील जोशी व किशोर पँवार के विज्ञान से जुड़े हुए लेखों को देखा जा सकता है। यह सामग्री विविध स्रोतों से चुनी गई जिनमें *चकमक, साइकिल, शैक्षणिक संदर्भ, खोजें-जानें, प्राथमिक शिक्षक, आधुनिक शिक्षा, पाठशाला भीतर और बाहर* आदि पत्रिकाएँ प्रमुख थीं। इसके अलावा, एनसीईआरटी व एकलव्य द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों से भी सामग्री का चयन किया गया।

समूह की शुरुआत सप्ताह में हर दिन एक आलेख, यानी पूरे सप्ताह में छह आलेख, भेजने से की गई। कुछ समय बाद शिक्षकों के अन्य संस्थागत कार्यों में जुड़ाव के चलते सप्ताह में तीन आलेख भेजे जाने लगे। इन तीन आलेखों में एक परिप्रेक्ष्य से जुड़ा होता है, दूसरा किसी विषय पर रोचक जानकारीपरक, और तीसरा कहानी, कविता, संस्मरण, यात्रा-वृत्तान्त आदि होता है। कभी-कभी किसी विषय पर कोई अच्छी चर्चा उभर रही हो तो उससे ही जुड़ा दूसरा आलेख भेजा जाता है। समूह में प्रेषित सामग्री पर साप्ताहिक चर्चा व आलेखों पर प्रतिक्रियाओं को लिखने का काम भी रखा गया। इससे पता चलता था कि सामग्री को समूह के सदस्यों द्वारा कैसे समझा जा रहा है, सदस्य अपनी भूमिका के सन्दर्भ में इसका क्या मतलब निकाल पा रहे हैं, इससे वह अपने स्कूल व समाज को कैसे जोड़ पा रहे हैं, और साथ ही प्रतिक्रियाओं के द्वारा लिखने के कौशल के विकास की बात भी शामिल थी।

सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ

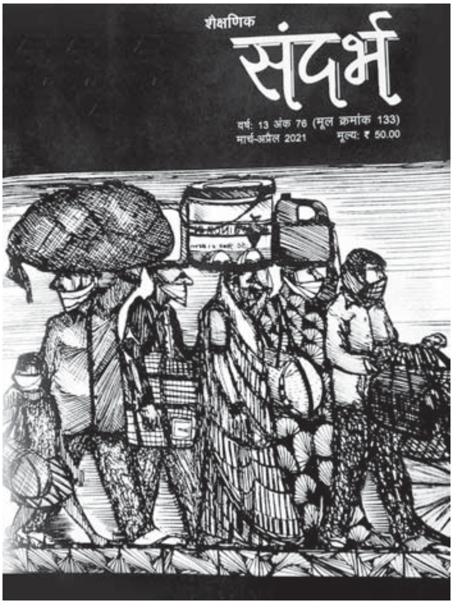
सामग्री ने निश्चित रूप से शामिल सदस्यों को सोचने के लिए प्रेरित किया। एस के पोट्टेकाट की मलयालम कहानी का हिन्दी अनुवाद 'हामिद खाँ' सदस्यों ने पढ़ा। यह पाकिस्तान भ्रमण पर गए लेखक की, एक मुस्लिम चाय वाले द्वारा की गई ख़ातिरदारी पर आधारित कहानी थी जो कुछ सदस्यों के ज़ेहन में घर कर गई। समूह के साथियों का हिन्दू-मुस्लिम के बारे में सोचने का विचार थोड़ा व्यापक हुआ जो मीडिया की बहसों ने बहुत संकुचित बना दिया था। कहानी को पढ़कर कुछ सदस्य अपनी स्मृतियों में चले गए। इसे



पढ़ते हुए एक सदस्य को अपने बचपन के गाँव के अल्पसंख्यक ताँगेवाले की याद आई और इसपर उन्होंने एक संस्मरण भी लिखा। इसी कहानी को पढ़कर एक अन्य सदस्या ने अपने मोहल्ले में कश्मीर से आने वाले एक कम्बल व शॉल बेचने वाले के अनुभव को जीवित किया जो मुस्लिम थे और उनका उनसे एक बेटी के समान रिश्ता था। वे उन्हें बाबा कहती हैं। वे उम्रदराज़ होते हुए भी उनसे हर वर्ष मिलने आते हैं, और इस सदस्य ने उनके लिए एक स्वेटर भी बनाया था। उन्होंने इस पूरे संस्मरण को लिखा। एक अन्य सदस्य ने अपने बचपन में साथ पढ़ने वाली अपनी दोस्त के बारे में बताया जो एक मुस्लिम परिवार से थीं।

साप्ताहिक परिचर्चा

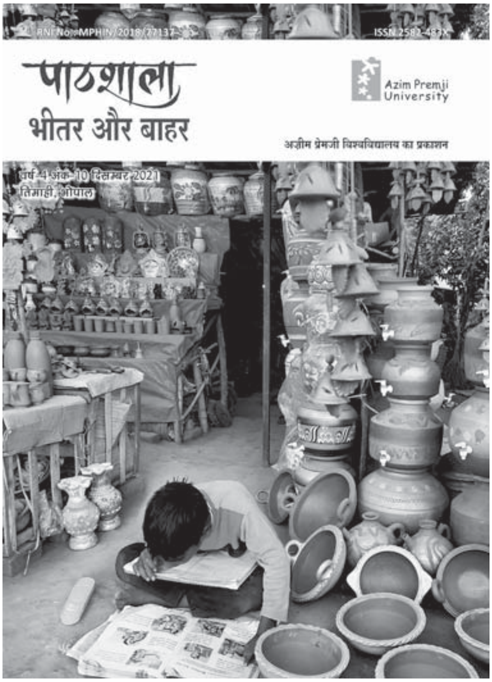
सप्ताह में होने वाली परिचर्चाओं का मुख्य उद्देश्य यह रहा कि शिक्षकों का ध्यान इस तरफ़ आकृष्ट किया जाए कि इस समूह से जुड़कर केवल पढ़ना ही नहीं है। उससे ज़्यादा महत्त्व की बात यह है कि सामग्री को कैसे पढ़ें? इस पूरी क़वायद का दीर्घकालिक उद्देश्य यह था कि शिक्षकों में शैक्षिक नज़रिया विकसित हो। इसमें यह भी ध्यान रखा गया कि यहाँ हम शिक्षकों के साथ कोई शैक्षिक परिप्रेक्ष्य पर कार्यशाला नहीं कर रहे हैं वरन् छोटे-छोटे आलेखों / कहानियों / कविताओं के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों, शैक्षिक व विषय के नज़रिए के संकेत उभारे जा रहे हैं जिससे वे समझ को अपने अनुभवों से जोड़ सकें और उनमें शिक्षा व विषय से जुड़ने का उत्साह पैदा हो सके। समूह की सालभर की चर्चाओं को तो यहाँ समेटना मुश्किल है। इन्हें केवल उदाहरणों के द्वारा ही समझा जा सकता है।



पसन्दीदा आलेख

समूह के अधिकांश लोग शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे थे। उनकी पसन्दीदा सामग्री भी इस क्षेत्र से सम्बन्धित थी। जैसे– कक्षा अनुभव, शिक्षक डायरी, बचपन के किसी शिक्षक से जुड़ी हुई याद, आदि। इसके साथ ही उन्हें समूह में भेजी गई कहानियाँ भी पसन्द आईं। जानकारीपरक लेख या विषयों से जुड़े सैद्धान्तिक लेखों का क्रम थोड़ा पीछे ही रहा।

इनमें से कुछ पसन्दीदा लेख थे : कक्षा के अनुभवों से जुड़ा 'शंकरजी का पसीना और जंगल का बनना' व माधव केलकर का आलेख 'बच्चों का पूर्वज्ञान बनाम वैज्ञानिक तर्क', *एनसीएफ़ 2005* के मार्गदर्शक सिद्धान्त, आदि। इसमें आगे यह भी बात है कि किस तरह से पारम्परिक ज्ञान को एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पड़ताल के दायरे में लाया जाता है और बच्चों से उसपर संवाद होता है। नंदा शर्मा का आलेख 'लालाजी के लड्डू से खुले चर्चा के द्वार' पढ़ने के दौरान भी कक्षा की प्रक्रियाओं पर अच्छी बात की गई। इसी तरह शिक्षकों की डायरी– जैसे जूलिया वेबर गार्डेन की डायरी, व शहनाज़ और पूजा बहुगुणा के सिलसिलेवार कक्षा अनुभवों पर लिखे लेखों को उन्होंने पसन्द किया। इन डायरियों को पढ़कर उन्हें समझ में आया कि डायरी में केवल यह नहीं लिखना है कि कक्षा में मैंने क्या किया, बल्कि यह भी कि उस समय बच्चे क्या कर रहे थे, कितने भाग ले रहे थे, आपको क्या लगा कि बच्चे क्या सोच रहे थे, किस तरह से भाग ले रहे थे, और यह भी कि कौन-सी चीज़ ठीक से नहीं हो पाई, आदि।



इसी तरह मोहम्मद उमर का लेख 'वे स्कूल क्यों आते हैं' पढ़कर शिक्षकों ने स्कूल में मिड-डे मील के महत्त्व को समझा। इसपर हुई चर्चा में कुछ शिक्षकों ने ईमानदारी से कहा कि इस लेख को पढ़ने से पहले हम मिड-डे मील को शिक्षकों पर एक बोझ समझते थे, लेकिन अब इसका महत्त्व समझ में आया है। 'भोजन की थाली से' लेख से हमारे देश की विविधता व खान-पान के बारे में बात हुई। उसमें यह बात स्पष्ट करने की कोशिश की गई कि दूसरी जाति, धर्म, राज्य के खान-पान, भाषा, पहनावा आदि को लेकर अकसर हमारे मन में कुछ सवाल रहते हैं और हमें अपना ही खान-पान, पहनावा व भाषा अच्छी लगती है। हमें अपने देश की बहुसांस्कृतिकता, बहुभाषिकता आदि को समझने की ज़रूरत है।

समूह में अगर कहानियों पर चर्चाओं की बात करें तो उदयन वाजपेयी की कहानी 'घुड़सवार' पढ़ते हुए उन्हें समझ में आया कि ऐसा अन्त नहीं होना चाहिए। एक शिक्षिका ने तो उसका अन्त ही बदल दिया और कहा कि ऐसा होना चाहिए। इसपर दूसरी शिक्षिका ने कहा कि कहानी का यह अन्त बिलकुल ठीक लग रहा है। जब यह कहानी के लेखक को प्रेषित किया गया तो उन्होंने वॉट्सएप पर अपनी टिप्पणी में शिक्षिका की मंशा की प्रशंसा की। उदयनजी की 'शेर और कवय्या' में शिक्षक कहानी की चित्रात्मकता को समझ पाए और प्रियम्वद की कहानी 'मुन्ना बुनाईवाले' भी उन्हें बहुत अच्छी लगी।

बहुत-से नए कवियों और कहानीकारों को भी सदस्यों ने पसन्द किया, मसलन, कुँवर नारायण, केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल, विनोद कुमार शुक्ल, अशोक वाजपेयी, नरेश सक्सेना, उदयन वाजपेयी, आदि। उनका कहना था कि इस तरह की कविताओं से हमारा सामना पहली बार हुआ। उन्हें यह भी एहसास हुआ कि कविताओं के कई अर्थ निकल रहे हैं?

समूह के अवलोकन

समूह की चर्चाओं से समझ में आ रहा था कि सभी को नए विचारों से जूझने का मौक़ा मिल रहा था। समूह के एक सदस्य अकसर चर्चाओं में कहते कि हमें निरन्तर ख़ुद को सवालों के घेरे में लाना चाहिए और कक्षा में एक योजना के साथ काम करना चाहिए। समूह की सदस्य एक शिक्षिका ने अपने कक्षा अनुभवों पर आधारित एक लेख साझा किया। उन्होंने बताया कि आलेखों को पढ़ने के बाद मेरा भी लिखने का मन हुआ और यह अनुभव लिखा। आप इस लेख को पढ़ें और इसपर अपना फ़ीडबैक दें। आगे आप लिखने पर भी हमारे साथ बात करें, चाहें तो कार्यशाला कर लें, इसके साथ ही वे यह भी कह रही थीं कि इन लेखों को पढ़ने के बाद लिखने के तरीक़ों के बारे में भी समझ बढ़ी है।

एक अन्य सदस्य ने कहा कि अब वे पठन सामग्री को कुछ ज़्यादा ध्यानपूर्वक देखती हैं। पत्रिकाओं से मिली सामग्री पढ़ने के बाद उन्होंने *चकमक*, *प्लूटो* और *साइकिल* की अन्य रचनाओं को भी पढ़ा और अब इनका बच्चों के साथ

उपयोग कर रही हैं। उन्होंने इस समूह में कार्य करते हुए विगत महीनों में तीन आलेख लिखे जो प्रकाशित भी हुए हैं। इससे उन्हें बहुत अच्छा लग रहा है और उनका आत्मविश्वास भी काफ़ी बढ़ा है।

एक और सदस्य, जो समूह में शुरुआत से ही जुड़े हैं और लेखों पर अपनी संक्षिप्त टिप्पणी भी लिखते हैं, का कहना था कि पुस्तकालय, कक्षा की प्रक्रियाओं से जुड़े लेख पढ़कर उन्होंने समझा कि बच्चों के साथ कार्य कैसे होना चाहिए। पुस्तकालय के अनुभव पढ़कर उन्हें अपने स्कूल से जुड़े समुदाय के बच्चों के साथ पुस्तकालय संचालित करने की प्रेरणा मिली और उन्होंने इसपर कार्य शुरू किया है। उनका यह भी कहना था समूह में पढ़ी गई सामग्री से यह पता चल रहा है कि एक शिक्षक बनने के लिए हमें अपने विषय के अलावा और बहुत-से मुद्दों पर समझ बनाने की ज़रूरत है।

एक अन्य सदस्या का कहना था कि एक वर्ष में जितनी सामग्री हमने पढ़ी, उतनी शायद ही कभी पढ़ी हो। साथ ही बहुत-से नए विषयों, अवधारणाओं से सम्बन्धित सामग्री भी पढ़ी। शिक्षक अब अपने काम के बारे में भी महत्त्वपूर्ण बातों को देख पाते हैं और बातचीत में रेखांकित कर पाते हैं। नई सामग्री का इन्तज़ार भी कुछ सदस्यों को रहता है। नए सदस्यों को भी इस समूह से जोड़ने का प्रयास सदस्य कर रहे हैं। कई सदस्य यह भी कहते हैं कि बच्चों को भी पढ़ने के लिए अच्छी और अधिक सामग्री मिलने के साथ उन्हें भी ऐसे चर्चा के मौक़े मिलने चाहिए।

निष्कर्ष

यूँ तो इस समूह को बनाने का दूरगामी लक्ष्य यह रहा कि एक चिन्तनशील समूह बने और सदस्यों में पढ़ने के रुझान का विकास हो और वे अपने काम से जुड़ी व अन्य किताबें भी पढ़ें। इसकी पृष्ठभूमि में यह समझ है कि पढ़ना सभी के लिए ज़रूरी है। यदि शिक्षा में काम की दृष्टि से देखें तो यह और भी महत्त्वपूर्ण है। यह शिक्षक और शिक्षा में काम करने वाले कार्यकर्ता के लिए पेशेवर विकास का एक रास्ता भी है। दूसरी तरफ़, यदि हम बच्चों में पढ़ने-लिखने के प्रति रुझान पैदा करना चाहते हैं तो उसका उत्तर भी इसमें है कि हम ख़ुद भी पढ़ें-लिखें। मक़सद यह है कि अपने काम के बारे में, काम को समझने के बारे में एक संवाद की प्रक्रिया शुरू हो पाए। ऐसे संवाद का कुछ हिस्सा मौखिक हो सकता है और कुछ लिखित।

अन्त में, हम सिर्फ़ इतना कह सकते हैं कि समूह के शिक्षक साथी अपने अन्दर के सीखने वाले को बाहर ला पा रहे हैं और कुछ सार्थक पढ़ रहे हैं। आगे यह भी लग रहा है कि इसमें निरन्तरता बनाए रखना और नए विचारों के साथ कक्षा में कार्य करना ज़रूरी है।

(इस आलेख को तैयार करने में अपने साथियों साहबुद्दीन अंसारी व योगेन्द्र शुक्ला के साथ हुई चर्चाओं का सहयोग मिला है)

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।
सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org